



राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

तिथि-10 जून 2022

सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, १२३

युगाब्द-५१२३, अंक-१५१, वर्ष-१५

ज्येष्ठ विक्रमी २०७९ (जून 2022)

मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'

कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश

सम्पर्क सूत्र: 9350945482

Web: www.aryanirmatrisabha.com

E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतां, मनो यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पतां ब्रह्मा यज्ञेन कल्पतां ज्योतिर्यज्ञेन कल्पतां स्वर्यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्। स्तोमश्च यजुश्च ऋक् च साम च बृहच्च रथन्तरं च। स्वर्देवाऽअगन्मामृताऽअभूम प्रजापतेः प्रजाऽअभूम वेद् स्वाहा॥

-यजुः० १८। २१

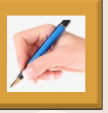
व्याख्यान-“यज्ञो वै विष्णुः, यज्ञो वै ब्रह्म” (इत्याद्यैतरेयशतपथब्राह्मणश्रुतेः) यज्ञ (यजनीय) जो सब मनुष्यों का पूज्य इष्टदेव परमेश्वर उसके हेतु-उसके अर्थ तथा उसके संग अतिश्रद्धा से [यज्ञ जो परमात्मा उसके लिये] सब मनुष्य सर्वस्व समर्पण यथावत् करें। यही इस मन्त्र में उपदेश और प्रार्थना है। कि-हे सर्वशक्तिमन् ईश्वर! जो यह आपकी आज्ञा है कि ‘सब लोग सब पदार्थ मेरे अर्पण करें’, इस कारण हम लोग (आयुः) उमर, प्राण, चक्षु (आँख), कान, वाणी, मन, (आत्मा) जीव (ब्रह्मा) तथा वेदविद्या और विद्वान् [(ज्योतीः)] ज्योतिः (सूर्यादिलोक तथा अग्न्यादि पदार्थ) तथा [(स्वः)] स्वर्ग (सुखसाधन), [(पृष्ठम्)] पृष्ठ (पृथिव्यादि सब लोक आधार तथा पुरुषार्थ) [(यज्ञः)] यज्ञ (जो-जो अच्छा काम हम लोग करते हैं) (स्तोम) स्तुति, [(यजुश्च०)] यजुर्वेद, ऋग्वेद, सामवेद, चकार से अथर्ववेद, बृहद्रथन्तर महारथन्तर साम इत्यादि सब पदार्थ आप के समर्पण करते हैं। हम लोग तो केवल आप के ही शरण हैं। जैसी आपकी इच्छा हो, वैसा हमारे लिए आप कीजिए। परन्तु हम लोग आपके सन्तान आपकी कृपा से (स्वर्गन्म) उत्तम सुख को प्राप्त हों। जब तक जीवें, तब तक सदा चक्रवर्ती राज्यादि भोग से सुखी रहें, और मरणानन्तर भी हम सुखी ही रहें। हे महादेवतामृत! हम देव (परम विद्वान् हों) तथा [(अमृता अभूम)] अमृत (मोक्ष जो आपकी प्राप्ति) उसको प्राप्त होके जन्म-मरण-रहित अमृतस्वरूप सदैव रहें। (वेद् स्वाहा) आपकी आज्ञा-पालन आप की प्राप्ति हो, जिससे उस क्रिया में सदा तत्पर रहें। तथा जो अन्तर्यामी आप हृदय में आज्ञा करो, अर्थात् जैसा हमारे हृदय में ज्ञान हो, वैसा ही सदा भाषण करें, उससे विपरीत कभी नहीं। हे कृपानिधे! हम लोगों का योगक्षेम (सब निर्वाह आप ही सदा करो।) आप के सहाय से सर्वत्र हमको विजय और सुख मिले।

सम्पादकीय



मजहब और सत्य

-आचार्य हनुमत् प्रसाद,
अध्यक्ष, आर्य महासंघ



इस सम्पूर्ण संसार में धर्म एक ही है, पहले भी था और आगे भी रहेगा। इसी प्रकार 'सत्य' भी सनातन है, अर्थात् पूर्व में भी था, अब भी है और आगे भी रहेगा। किन्तु संसारभर में मजहब अर्थात् मन्त, पन्थ, सम्प्रदाय अनेक हैं, जो पहले नहीं थे। जहां धर्म का सम्बन्ध 'सत्य' के साथ सदैव था, है और रहेगा, वहीं मजहब का 'सत्य' से कोई निश्चित सम्बन्ध नहीं है। मजहबों की जो-जो मान्याएँ मजहबी, पैगम्बरों, रसूलों या तथाकथित स्वयंभू गुरुओं के आदेशों-निर्देशों के आधार पर चली हैं, वे सब मान्यताएँ निरर्थक हैं, मिथ्या हैं अर्थात् सम्पूर्ण मानव समाज में जहर घोलने का काम करती हैं। इसी जहर से जहरीला होकर विश्वभर का मानव त्राहि-त्राहि कर उठता है। तनिक विचार कीजिए! यूरोप के प्रथम पीढ़ी के वैज्ञानिकों का, खगोलविदों का क्या हस्र हुआ था? गैलीलियो, जर्दानो ब्रूनो, सुकरात आदि की विज्ञान सम्मत मान्यताएँ मजहबी अज्ञानतापूर्ण क्रूरता के पैरों तले रौंद दी गई, और भी लाखों लोग सत्याचरण करने पर तड़पा-तड़पाकर ईसाई मत की छत्रछाया में मार डाले गए। रही बात इस्लाम मजहब की, तो इस मजहब की नींव ही झूठ और फरेब पर टिकी हुई है। "अण्डरसटैंडिंग मुहम्मद" नामक पुस्तक में इस्लाम की विदुषी लेखिका -अली सीना कुरान की एक आयत उद्धृत करती हैं- "ऐ रसूल याद करो किस तरह काफिर तुम्हारे खिलाफ साजिश, फरेब कर रहे थे, ताकि तुम्हें कैद कर सकें, तुम्हें मार डालें, तुम्हें तुम्हारे घर से निकाल फेंके। वे फरेब कर रहे थे और अल्लाह भी उन्हें फरेब (झांसा) दे रहा था, और अल्लाह तो सब फरेब करने वालों से बेहतर फरेब करने वाला है। सबसे अच्छा फरेब तो अल्लाह ही कर सकता है। (कुरान 8/30)

अब जिस मजहब के पैगम्बर ने अल्लाह को ही न बक्सा हो, अल्लाह को ही खुले तौर पर सबसे बड़ा फरेबी मान लिया हो, उस मजहब से यदि आप सत्य की, धर्म की, शान्ति की, सहभाव की कल्पना करते हैं, तब निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि- आपके मानव होने में भारी संशय है। वास्तविकता यह है कि इस्लाम के पैगम्बर ने इस्लाम की स्थापना ही अपने लोगों में भय दिखाकर की थी, जो कि उपरोक्त पंक्तियों में स्पष्ट है। पैगम्बर ने इस्लाम का प्रारम्भ करते समय से कहना प्रारम्भ कर दिया था कि मजहब खतरे में, इस्लाम खतरे में है, अतः इसे बचाने के लिए मार-काट करो, लूट-पाट करो, बलात्कार करो, पर इस्लाम को बचाओ। यह सब करते-करते आज विश्वभर के 57 देशों में इस्लामी सत्ता है, किन्तु मजहब पर, इस्लाम पर जो खतरा था वह अभी भी टला नहीं है। आज विश्व इस्लामी आतंकवाद के सामने लाचार है, विवश है। 2001 ई. से दुनियाभर में 13000 से अधिक आतंकवादी हमले हो चुके हैं, जिसमें लाखों निर्दोष नागरिक, लहलुहान हो गए, अनगिनत जीवन नष्ट कर दिए

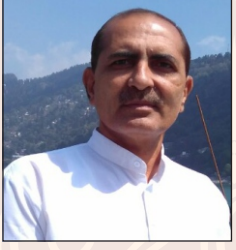
गए। प्रश्न- यह सब करने वाले कौन थे? कोई सैय्यद, पीर, जिन्न नहीं थे, न शैतान थे, न आदम और हब्बा थे सिर्फ और सिर्फ मुसलमान थे। क्योंकि इस्लाम 'धर्म' नहीं है, यह मजहब है, मजहब।

इसी प्रकार हमारे देश में भी कुछ कम नृशंतेर घटनाएँ नहीं हुई हैं, वैष्णव, शैव और शाक्तों ने पीढ़ी दर पीढ़ी खूब खून बहाया है। एक दूसरे के देवस्थानों पर आक्रमण भी किये हैं, क्यों? क्योंकि यह भी किन्हीं तथाकथित गुरुओं-प्रवर्तकों के चलाए हुए मत-पन्थ हैं, मजहब हैं। आज भी जितने जैन, बौद्ध, सिख हैं, भिन्न-भिन्न प्रकार के डरे हैं, वे सभी भी खुली हिंसा अभी न करते हों किन्तु छुपे प्रकार से कुटिलता पूर्वक षड्यन्त्र करते और एक दूसरे के नाश की कामना ही करते हैं। इन मजहबों ने अभी हिंसा-प्रतिहिंसा का त्याग भी न सोचा था कि हमारे देश में सेकूलर व्यवस्था स्थापित हो गई। जिसमें धर्माचार्य तो मजहबी हो गए और राजनेता वोटबैंक का गणित लगाकर अपने मजहब की श्रेष्ठता और दूसरे मजहबों की जड़ें खेदने लग गए। यह जगजाहिर है कि यह देश सृष्टि के आदि से ही आर्यावर्त था, यहां के निवासी आर्य थे। कालान्तर में आर्य अपने जीवनमूल्यों से पतित होकर हिन्दू कहलाए, जब यहां के मूलनिवासी अर्थात् मुख्य स्वामी हिन्दू ही हैं, तब यह काशी, मथुरा, अयोध्या आदि तीर्थस्थान एवं उनसे सम्बन्धित मुख्य आस्थाकेन्द्र हिन्दुओं के ही हैं, तब फिर इन प्रतीकों को अपमानित करने, अनधिकृत कब्जा जमाने, अवांछित गतिविधियाँ चलाने और मजहब आतंकवाद के बल पर समाज में भय फैलाने की छूट किसी को भी कैसे और क्यों दी जा सकती है? यदि आप इस्लाम का भय दिखाकर हिन्दुओं को अपमानित करोगे, चिढ़ाओगे? तो फिर कुरान और हदीसों के जिक्र तो होंगे ही, अब एक दो कण्ठों से हो रहे हैं, कल को हजारों और लाखों कंठों से होगा। मजहबों का झूठ तो उभरेगा, निकलेगा ही वह मजहब चाहे हमारा हो, चाहे इस्लाम का हो या ईसाई का। मजहब तो मजहब है, यह लड़ाएगा ही। यदि शान्ति चाहिए! सुख चाहिए तो "धर्म" की शरण में आओ! सत्य की शरण में आओ। धर्म ही मानवता को बचा सकता है। सत्य ही बचा सकता है। क्या यह सत्य नहीं कि कुछ सौ पीढ़ी पहले हम सभी धार्मिक थे, सत्यवादी थे और परस्पर भाई-भाई थे। हमने धर्म छोड़ दिया सत्य त्याग दिया, मजहब अपना लिया और काल्पनिक अल्लाह के नाम पर अपने घर लूटे, अपने भाई काटे, अपनी ही ललनाओं गरिमा नष्ट की। अरे भले मानवों! जिस रसूल के लिए अपमान की बात कर रहे हो, जिसके नाम पर गर्दने नापी और अब नापने की बातें कर रहे हो, वह तुम्हारा पूर्वज पुरुष नहीं था, न है, न कभी साबित कर पाओगे। अतः मजहब से "धर्म" पर लौटो! सत्य पर लौटो! यही मानवता है। यही आर्य मार्ग, सनातन मार्ग है। इसी में सुख है, इसी में शान्ति है।



सहज सरल सांख्य-२३

- आचार्य सतीश, दिल्ली



प्रथम अध्याय में ही बन्ध के सभी कारणों पर विचार करने से जब अन्य कोई कारण न होने से अविवेक ही बन्ध का कारण समझना चाहिए।

मुक्ति विवेक साध्य होने के कारण वह अवस्था परिवर्तनशील होनी चाहिए। तब तो मुक्त पुरुष भी सतत बन्धन में आ जाएगा। फिर मुक्ति कैसी?

ऐसा नहीं है। मुक्त आत्मा का उस अवस्था में पुनः बन्ध के साथ योग नहीं होता, यदि ऐसा हो तो मोक्ष अपुरुषार्थ हो जाएगा। यह परमपुरुषार्थ ही न रहेगा। मोक्ष की अवस्था तो संसार से अत्यन्त विशिष्ट होती है। यदि उसे भी संसार की तरह मान लिया जाए तो फिर बद्ध और मोक्ष में अन्तर ही क्या रह जाएगा।

यदि दोनों अवस्थाएँ अलग-अलग हैं तो फिर आत्मा को नित्यमुक्त क्यों कहते हो?

नित्यमुक्त आत्मा के स्वरूप साक्षात्कार में जो विघ्न बाधा है (जिनमें सबसे बड़ा अविवेक है) उनका बने रहना आत्मा का बद्ध तथा उनका हट जाना आत्मा का मोक्ष है। वस्तुतः बन्ध और मोक्ष व्यवहार की वस्तु है। आत्मा का स्वरूप तो सदा एकरूप रहता है, उसमें किसी प्रकार विकार या परिवर्तन की सम्भावना नहीं है। उसके लिए बन्ध और मोक्ष का व्यवहार अविवेक एवं विवेक के कारण है। जैसे गुडहल के फूल सानिध्य से स्फटिक लाल प्रतीत होता है वास्तव में तो वह श्वेत ही बना रहता है। इसी प्रकार अविवेक से बद्ध आत्मा के वास्तविक चैतन्य अर्थात् दुखादि से असंश्लिष्ट स्वरूप में कोई अन्तर नहीं आता। बन्ध अवस्था का बाह्य आवरण अविवेक हट जाता है तब उसे मुक्त कहा जाने लगता है। बन्ध और मोक्ष अवस्थाओं के भिन्न होने पर भी आत्मा में किसी प्रकार का अन्तर नहीं आता, वस्तुतः वह सदा मुक्त है।

पहले तीनों प्रकार के दुःख को मिटाना परमपुरुषार्थ कहा गया, फिर अविवेक का ध्वंस मोक्ष कहा गया, ये क्या ये दोनों विरोधी बातें नहीं हुईं?

दोनों एक ही हैं, अविवेक ही दुःख का कारण है, अतः केवल कार्यकारण का भेद है। अतः कार्य ध्वंस अथवा कारण ध्वंस किसी रूप में भी कहकर मोक्ष का वर्णन किया जा सकता है।

यदि अविवेक मुक्ति है तो वह आत्मज्ञान के उपदेश के श्रवण मात्र से प्राप्त हो जाना चाहिए?

आत्मज्ञान के अधिकारी तीन अर्थात् मन्द, मध्य और तीव्र प्रकार के बताए गए हैं। यह कोई नियम नहीं है कि प्रत्येक को आत्मज्ञान श्रवण मात्र

से हो जाए। किसी को हो सकता है, हर किसी को नहीं। जिन्हें श्रवण मात्र से आत्मज्ञान न हो मनन, निदिध्यासन, यम नियमादि का पालन समाधि लाभ के लिए अन्य आवश्यक साधनों का प्रयत्न पूर्वक अनुष्ठान आवश्यक है। अपितु जिन्हें श्रवण मात्र से आत्मज्ञान हो उन्हें भी संस्कार शेष अविवेक फिर न उभरे और अविवेक को बढ़ने का अवसर न मिले इसलिए उपरोक्त साधनों का प्रयोग विवेक की दृढ़ता के लिए करते रहना चाहिए।

ध्यान आदि लगाने के लिए आसन की सुविधा आवश्यक है, उसके लिए क्या नियम है?

अभ्यासी को जिस आसन के स्थिर होने पर सुख-सुविधा का अनुभव हो, वही आसन ठीक समझना चाहिए। अमुक आसन लगाकर ही ध्यान करे ऐसा कोई नियम नहीं है।

तो फिर ध्यान का स्वरूप क्या है?

जब आत्मा के अतिरिक्त समस्त विषयों से हटकर मन आत्मा में एकतानता की स्थिति को बनाता है तो उस अवस्था को ध्यान कहा जाता है। इसमें मन बाह्य विषयों से सर्वथा रहित हो जाता है, वहां केवल आत्म चिन्तन निर्बाध चलता रहता है।

जब आत्मा प्रत्येक अवस्था में असंग एकरस है तब ध्यान आदि में विशेषता और आवश्यकता क्या?

यह ठीक है कि आत्मा सदा असंग एक समान है, उसमें किसी तरह के विकार या परिणाम की सम्भावना नहीं, परन्तु अविवेक के कारण जब वह प्रकृति के सम्पर्क में रहता है तो विविध क्लेश आदि का अनुभव करता है जबकि ध्यान समाधि के द्वारा विवेक हो जाने पर यह स्थिति नहीं रहती अर्थात् क्लेश आदि का निरोध उस स्थिति को विशेषता है, इसलिए ध्यान समाधि के लिए प्रयत्न करना आवश्यक है।

असंग आत्म में विषयों का उपराग कैसे हो जाता है?

अविवेक के कारण आत्मा प्रकृति के सम्पर्क में आता है यही आत्मा का विषयों में उपराग अथवा भोग की अवस्था है।

इस उपराग का स्वरूप क्या है?

जपापुष्प और स्फटिक मणि के संसर्ग से जपा-फूल का रंगाभास स्फटिक में होता है। यह वैसा उपराग नहीं है किन्तु पुरुष के चेतन होने से बुद्धि को राग-द्वेष-वासना आदि धर्मों का अभिमान होता है। इन्द्रिय और अन्तःकरण साधनों के द्वारा आत्मा बाह्य विषयों की अनुभूति करता है, यही आत्मा में बाह्य का उपराग है। यह केवल बाह्य विषयों का अनुभव है, इससे आत्मा के वास्तविक स्वरूप में किसी प्रकार का अन्तर नहीं आता, उसका शुद्ध चैतन्य स्वरूप सदा निर्बाध रहता है।

क्रमशः

संध्या काल

ज्येष्ठ-मास, ग्रीष्म-ऋतु, कलि-5123, वि. 2079

(17 मई 2022 से 14 जून 2022)

प्रातः कालः 5 बजकर 15 मिनट से (5.15 A.M.)

सांय कालः 7 बजकर 15 मिनट से (7.15 P.M.)



आषाढ़-मास, वर्षा-ऋतु, कलि-5123, वि. 2079

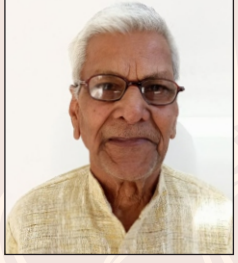
(15 जून 2022 से 13 जुलाई 2022)

प्रातः कालः 5 बजकर 30 मिनट से (5.30 A.M.)

सांय कालः 7 बजकर 00 मिनट से (7.00 P.M.)

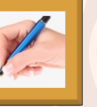


नियम



नियम का पहला नियम है शौच अर्थात् स्वच्छता। स्वच्छता दोनों प्रकार की बाहरी भी और अन्दर की भी। बाहरी शौच, शरीर की स्वच्छता। समय पर नहाना, नहाने से पहले दातौन, मंजन द्वारा मुंह शुद्धि। हम सभी अनुभव करते हैं कि यदि किसी दिन किसी कारण से स्नान न हो सके तो सारा दिन मन पर एक अजीब सी सुस्ती छाई रहती है। कुछ कामों में मन भी नहीं लगता है। शरीर पर भी कई बार खुजली अनुभव होने लगती है। और यदि गर्मी के दिन हैं तो बिना स्नान रहा ही नहीं जा सकता। इसी प्रकार स्नान के बाद दैनिक पहनने के वस्त्र भी प्रतिदिन बदलने होते हैं। गर्मी की ऋतु में तो पसीने के कारण कपड़ों में शरीर के साथ साथ बदबू हो जाती है। जिससे पास बैठने वाले भी कतराने लगते हैं। दैनिक कार्यों में ही व्यवधान सा आ जाता है। असमय पर भोजन आदि फिर धार्मिक कार्यों में लोकवधान आना ही आना है। जैसे संध्या, उपासना, हवन और स्वाध्याय आदि। आध्यात्मिक कार्यों में व्यवधान से आध्यात्मिक उन्नति में बाधा आदि है और लौकिक कार्यों की बाधा लोक की उन्नति में बाधा बन जाती है अर्थात् मनुष्य की उन्नति बाधित हो जाती है। मनुष्य जीवन का लक्ष्य भी आध्यात्मिक और उन्नति पर प्रभाव होता है। शौच में दूसरा प्रकार है, आध्यात्मिक शौच। आध्यात्मिक अर्थात् अन्दर के भागों का शौच करना। हृदय, मस्तिष्क के साथ आत्मा का शौच। आध्यात्मिक का अर्थ है आत्मा का होता है आत्मा की स्वच्छता के बिना सभी शौच व्यर्थ हैं। यमों के अनुपालन से आत्मा की शुद्धि में बहुत सहायता होती है। वास्तव में यम अनुपालन है ही आत्मा की शुद्धि हेतु। अहिंसा, सत्य अस्तेय, ब्रह्मचर्य अपरिग्रह के अनुपालन से आत्मा की शुद्धि स्वतः होने लगती है। इनके अनुपालन से प्राणायाम-उपासना और परोपकार कार्यों में रुचि बढ़ जाती है तथा उपासना में ध्यान भटकने की क्रिया मंद होकर समाप्त हो जाती है। इससे यह सिद्ध होता है। कि आन्तरिक शौच इतना आसान नहीं है, इसके लिए तो यमों के अनुपालन जैसा कठोर प्रयास आवश्यक है। लेकिन प्रभु ने जीवों पर

-आर्य आनन्द स्वरूप, मुजफ्फरनगर



दया भी अनन्त ही की हुई है। संसार में उसने कोई वस्तु, कोई कर्म ऐसा नहीं बनाया है जो असम्भव हो। 'करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।' अभ्यास से जीव सभी कुछ कर सकता है। सभी कुछ पा सकता है जीव के लिए सबसे कठिन प्राप्त वस्तु मोक्ष भी जीव अभ्यास, प्रयास से पा सकता है, पा जाता है। बहुत सतर्कता की भी आवश्यकता है। काजल की कोठ में कैसे हो स्नानो जाय, एक लीक काजल की लागी ही पे लागी है। वैसे तो सारा संसार ही काजल की कोठरी सदृश्य है, यहाँ जरा सा भी विवेक डगमगाया, बस काजल की लीक तैयार है। इस आन्तरिक शुद्धि में अन्न का भी ध्यान रखना होगा। कहते हैं न कि जैसा खाये अन्न, वैसा होवे मन और जैसा होवे मन वैसा हो कर्म। अन्न के प्रकार से तात्पर्य अन्न की विभिन्नता नहीं अपितु उसके प्राप्ति साधन से भी है। अधर्म से प्राप्त, स्वच्छता से रहित अन्न, अशुद्ध अन्न कभी मन, मस्तिष्क और आत्मा की शुद्धि में सहायक नहीं हो सकता उल्टे उन्हें भी दूषित करने वाली ही होगा। दृष्टांत है- किसी तपस्वी संन्यासी ने किसी अधर्मी के घर भोजन करने पर उसकी चांदी की चम्मच झोले में डाल ली थी जबकि संन्यासी पूर्ण अस्तेयी, धर्मात्मा थे। एक और कथा पढ़ी थी। कोई संन्यासी अपने पास मुर्दे की खोपड़ी रखते थे। किसी ने पूछा महाराज आप यह खोपड़ी को साथ रखते हैं, यह तो अपवित्र है। साधू ने उत्तर दिया कि यह खोपड़ी मुझे मृत्यु की याद दिलाती रहती है कि एक दिन मेरी भी यही दशा होगी और इस विचार से मुझे प्रभु की याद आ जाती है कि इस दशा को करने वाला तो प्रभु ही है और इस प्रकार मेरे मन, मस्तिष्क, आत्मा में बुराई की कालख लगने से बची रहती है। इस आन्तरिक शुद्धि के लिये क्या क्या नहीं करना होगा। लोग अलग-अलग ढंग, अलग-अलग उपायों से इस शुद्धि के लिए प्रयत्न करते रहते हैं। सबसे उत्तम उपाय तो यमों का अनुपालन है और सटीक भी ऐसा कि कहीं कोई संशय नहीं शेष रह जाता है। जिन खोजा तिन पाईया गहरे पानी पैठ, गहरे पानी में तो उतरना ही पड़ेगा, कठिन श्रम तो करना ही होगा अन्यथा 'मैं बैरी ढूँढन चली, रही किनारे बैठ।' किनारे पर बैठ कर अर्थात् बिनाश्रम तो कुछ भी प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

17 मई- 14 जून 2022							ज्येष्ठ	ऋतु- ग्रीष्म
सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार		
	अनुराधा	ज्येष्ठा/मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा		
	कृष्ण प्रतिपदा/द्वितीया	कृष्ण तृतीया	कृष्ण चतुर्थी	कृष्ण पंचमी	कृष्ण षष्ठी	कृष्ण सप्तमी		
	17 मई	18 मई	19 मई	20 मई	21 मई	22 मई		
शतभिषा	पूर्वाभाद्रपदा	उत्तराभाद्रपदा	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका		
कृष्ण अष्टमी	कृष्ण नवमी	कृष्ण दशमी	कृष्ण एकादशी	कृष्ण द्वादशी	कृष्ण त्रयोदशी	कृष्ण चतुर्दशी		
23 मई	24 मई	25 मई	26 मई	27 मई	28 मई	29 मई		
कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा		
कृष्ण अमावस्या	शुक्ल प्रतिपदा	शुक्ल द्वितीया	शुक्ल तृतीया	शुक्ल चतुर्थी	शुक्ल पंचमी	शुक्ल षष्ठी		
30 मई	31 मई	1 जून	2 जून	3 जून	4 जून	5 जून		
मघा	पूर्व फाल्गुनी	उ० फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा		
शुक्ल षष्ठी	शुक्ल सप्तमी	शुक्ल अष्टमी	शुक्ल नवमी	शुक्ल दशमी	शुक्ल एकादशी/द्वादशी	शुक्ल त्रयोदशी		
6 जून	7 जून	8 जून	9 जून	10 जून	11 जून	12 जून		
अनुराधा	ज्येष्ठा							
शुक्ल चतुर्दशी	शुक्ल पूर्णिमा							
13 जून	14 जून							

15 जून- 13 जुलाई 2022							आषाढ़	ऋतु- वर्षा
सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार		
		मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा/शतभिषा		
		कृष्ण प्रतिपदा	कृष्ण द्वितीया	कृष्ण तृतीया/चतुर्थी	कृष्ण पंचमी	कृष्ण षष्ठी		
		15 जून	16 जून	17 जून	18 जून	19 जून		
पूर्वाभाद्रपदा	उत्तराभाद्रपदा	रेवती	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका		
कृष्ण सप्तमी	कृष्ण अष्टमी	कृष्ण नवमी	कृष्ण दशमी	कृष्ण एकादशी	कृष्ण द्वादशी	कृष्ण त्रयोदशी		
20 जून	21 जून	22 जून	23 जून	24 जून	25 जून	26 जून		
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	आश्लेषा		
कृष्ण चतुर्दशी	कृष्ण चतुर्दशी	कृष्ण अमावस्या	शुक्ल प्रतिपदा	शुक्ल द्वितीया	शुक्ल तृतीया	शुक्ल चतुर्थी		
27 जून	28 जून	29 जून	30 जून	1 जुलाई	2 जुलाई	3 जुलाई		
मघा	पूर्व फाल्गुनी	उ० फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा		
शुक्ल पंचमी	शुक्ल षष्ठी	शुक्ल सप्तमी	शुक्ल अष्टमी	शुक्ल नवमी	शुक्ल दशमी	शुक्ल एकादशी		
4 जुलाई	5 जुलाई	6 जुलाई	7 जुलाई	8 जुलाई	9 जुलाई	10 जुलाई		
अनुराधा/ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा						
शुक्ल द्वादशी	शुक्ल त्रयोदशी/चतुर्दशी	शुक्ल पूर्णिमा						
11 जुलाई	12 जुलाई	13 जुलाई						



गृहस्थ सम्बन्ध : भाग-३४

- आचार्य संजीव आर्य, मु०नगर



दर्शनकारों ने इस पवित्रता के सम्बन्ध में पर्याप्त चर्चा की है, वस्तुतः जब हम आत्मा पर मल व विक्षेपों की बात कर रहे होते हैं तब चित्त पर पड़े हुए मलिन संस्कार ही लक्ष्य होते हैं। दुःख का मूल अविद्या ही है- (क) ज्ञानान्मुक्तिः। व (ख) बन्धो विपर्यात्। अर्थात् ज्ञान अथवा विद्या से मुक्ति होती है और इसके विपरीत अज्ञान अथवा अविद्या से बन्ध होता है। सार यह है कि जिसको हम आत्मा पर मल और विक्षेप का नाम दे रहे हैं वह किसी ना किसी रूप में अविद्या ही है। इस अविद्या को उखाड़ फेंकने के लिए, विद्या को प्राप्त करने के लिए तप करना पड़ता है। वस्तुतः विद्या कभी भी बिना परिश्रम के नहीं आती। कुछ पुस्तकें कम परिश्रम से पढ़ लें, डिग्रियाँ प्राप्त कर लें, तकनीक सीख लें और आध्यात्मिक ज्ञान किसी से सुन भी लें तब भी तप किए बिना उस ज्ञान को आत्मसात और फलीभूत नहीं कर सकते। जब वह ज्ञान आत्मसात हो जाता है तब उसे प्रत्यक्ष किया जाता है वह प्रत्यक्ष हुआ ज्ञान ही सिद्धान्त कहलाता है। इस प्रत्यक्ष के लिए ही विद्या और तप का आश्रयण किया जाता है। यह तप धर्माचरण और योगाभ्यास है। यही बुद्धि को पवित्र करता है। तभी जीवन पूर्ण सार्थकता को प्राप्त होता है।

इस प्रकार के अनेकों कर्तव्याकर्तव्यों से सजा-धजा गृहस्थ अपने आप में सुखों से पूरित रहा करता है। सनातन संस्कृति के समस्त अंग-प्रत्यंग वस्तुतः मोक्ष रूपी फल के लिए ही किसी न किसी रूप में कार्य करते हैं सो यह गृहस्थ भी उसी परमफल की ओर ले जाने का साधन या उसी मार्ग का एक पड़ाव है। यह भी जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति में बड़ा सहायक है। ऋषियों के सहाय उनकी अज्ञानानुसार इसे जीने से इसके और मोक्ष दोनों के सुख प्राप्त किए जा सकते हैं। उक्त क्रम में सामान्य कर्तव्यों के पश्चात् कुछ विशेष धर्मों की चर्चा ऋषि के मन्तव्यानुसार करेंगे लेकिन उससे पूर्व किंचित सावधानियों की चर्चा कर लें जिनके बिना एक सामान्य नागरिक से राजा तक सभी कष्ट पाते हैं।

मृगयाक्षा दिवास्पनः परिवादः स्त्रियो मदः।

तौर्यत्रिकं वृथाद्या च कामजो दशको गणः।

अर्थ- मृगया अर्थात् शिकार खेलना, द्यूत और प्रसन्नता के लिए भी चौपड़ आदि खेलना, दिन में सोना, हँसी ठट्ठा मिथ्यावाद करना, स्त्रियों के साथ सदा अधिक निवास में मोहित होना, मद्यपानादि नशों का करना, गाना बजाना नाचना वा इनको देखना और वृथा इधर-उधर घूमते फिरना, ये दश दुर्गुण काम से होते हैं। और

पैशुन्यं साहसं द्रोह ईर्ष्याऽसूयार्थदूषणम्।

वाग्दण्डजं पारुष्यं क्रोधजोऽपि गणोऽष्टकः॥

अर्थ- चुगली खाना, बिना विचारे काम कर बैठना, जिस किसी से वृथा वैर बाँधना, दूसरे की स्तुति सुन वा बढ़ती देख के हृदय में जला करना, दूसरे के गुणों में दोष और दोषों में गुण स्थापित करना, बुरे कामों में धन का लगाना, क्रूर

वाणी और बिना विचारे पक्षपात से किसी को करडा दण्ड देना, ये आठ दोष क्रोधी पुरुष में उत्पन्न होते हैं। ये अट्ठारह दुर्गुण हैं, इनको अवश्य छोड़ दें। और भी-

द्वयोरप्येतयोर्मूलं यं सर्वे कवयो विदुः।

तं यत्नेन जयेल्लोभं तज्जावेतावुभौ गणौ।

अर्थ- जो इन कामज और क्रोधज १८ दोषों के मूल जिस लोभ को सब विद्वान् लोग जानते हैं, उनको सभी प्रयत्न से जीतें। क्योंकि लोभ ही से पूर्वोक्त १८ और अन्य दोष भी बहुत से होते हैं। इसलिए हे गृहस्थ लोगों! चाहे वह राजा का ज्येष्ठ पुत्र क्यों न हो, परन्तु ऐसे दोषवाले मनुष्य को राजा कभी न करना। यदि भूल से हुआ हो, तो उसको राज्य से च्युत करके किसी योग्य पुरुष को, जो कि राजा के कुल का हो राज्याधिकारी करना, तभी प्रजा में आनन्द मंगल सदा बढ़ता रहेगा।

काम और क्रोध- इनमें से काम के संयोजन के लिए गृहस्थ को रक्षा गया है। अब यहाँ काम से उत्पन्न दोषों को भी गिनवाया गया और उनसे बचने को भी कहा गया है। ऋषि दयानन्द कहते हैं कामनाओं के बिना मनुष्य संसार में रह ही नहीं सकता है। यहाँ तक कि मुमुक्षुत्व भी तो एक कामना ही है। किन्तु विकृत हुआ काम दोषों को उत्पन्न करता है, ये दोष एक-एक करके हमारे जीवन में दुखों के काँटे बिखेर देते हैं। शिकार, द्यूत और चौपड़ आदि जुए के कारण पता नहीं कितने राजे-रजवाड़े बर्बादी के गले में समा गए। आलसीपन ने जिसके शरीर में शरण ली उसे सदैव नष्ट भ्रष्ट ही तो किया है, व्यर्थ का हँसी ठट्ठा भी महाभारत के युद्ध कर एक उत्प्रेरक कारण था। इसी प्रकार ये सभी दोष त्याज्य हैं। इन्हें त्यागना भी सरल नहीं है अतः यत्न पूर्वक जीतने का आदेश ऋषियों ने दिया है।

मन्यु क्रोध का उपयोगी संस्कार कह सकते हैं और है भी। हम आर्यगण ईश्वर से प्रार्थना करते हैं **मन्युरसि मन्युं मयि धेहि।** अर्थात् हमें दुष्टों को भस्म करने की शक्ति चाहिए। किन्तु जब यह क्रोध अनियन्त्रित हो जाता है तब दोषों को उत्पन्न करने लगता है। और हमारे जीवन को नष्ट करने लगता है। इस क्रोध पर नियन्त्रण रखने का कार्य काम जैसे प्रबल शत्रु पर नियन्त्रण रखने से भी कठिन है। लेकिन इन दोनों पर नियन्त्रण रखने के लिए इनके मूल लोभ पर ही नियन्त्रण रखना सीखना चाहिए। इसका सबसे उत्तम उपाय है। अष्टांग योग/उपासना उपासना में अपना निरीक्षण प्रतिदिन करना होता है, दोषों को छोड़ने का संकल्प व ईश्वर से सहाय की प्रार्थना करते हैं, यदि आपने अपनी स्वयं की बीमारी को पहचानना सीख लिया तो आप उसका उपाय भी कर सकते हैं और रोकथाम भी। ऋषि निर्देश भी है कि न्यूनतम 1 घण्टा तो उपासना सबको करनी ही चाहिए, जी हाँ! उपासना केवल वानप्रस्थी और संन्यासियों का ही काम नहीं अपितु गृहस्थों को भी उपासना अष्टांग योग की रीति से करनी चाहिए। यह बहुत सी समस्याओं का सबसे सरल उपाय व हमारे जीवन लक्ष्य का अभ्यास भी बनाए रखती है।

क्रमशः

आओ यज्ञ करें!



पूर्णिमा 14 जून
अमावस्या 29 जून
पूर्णिमा 13 जुलाई
अमावस्या 28 जुलाई

दिन-मंगलवार मास-ज्येष्ठ
दिन-बुधवार मास-आषाढ़
दिन-बुधवार मास-आषाढ़
दिन-गुरुवार मास-श्रावण

ऋतु-ग्रीष्म नक्षत्र-ज्येष्ठा
ऋतु-वर्षा नक्षत्र-आर्द्रा
ऋतु-वर्षा नक्षत्र-पूर्वाषाढ़ा
ऋतु-वर्षा नक्षत्र-पुनर्वसु



ऋषि दयानन्द की संघर्ष यात्रा – आचार्य सतीश, दिल्ली

जन्म व प्रारंभिक शिक्षा

जिस राष्ट्र में सृष्टि के आदि में मानव की उत्पत्ति हुई हो, जिस भूमि से सार्वभौमिक, अविनाशी ज्ञान का प्रकाश करोड़ों वर्षों तक फैला हो, जिस भूमि के अधिपतिओं ने सारे संसार की भूमि को अपने श्रेष्ठगुणों से करोड़ों वर्षों तक आप्लावित किया हो, जिस भूमि पर उत्पन्न होने वाले मनुष्यों ने सारे संसार भर के मनुष्यों में मानवधर्म का अक्षुण्ण उपदेश अपने आचरण से दिया हो, करोड़ों वर्षों तक जिसके निवासियों ने विश्व को परिवार मानकर विश्वभर के प्राणिमात्र के सुख की, शांति की, समृद्धि की और उन्नति की कामना सदैव अन्तःकरण की असीम गहराई से करते हुए ही पूर्ण पुरुषार्थ किया हो। वही राष्ट्र जब विनाश की ज्वालाओं में जलता हुआ भी, अज्ञान के घनघोर अन्धकार से घिरा, आततायियों द्वारा हजारों वर्षों से आक्रान्त होता हुआ भी, अपने उद्धार का मार्ग नहीं खोज पा रहा था, जिसकी अपनी ही सीमाओं के भीतर मानवता त्राहि-त्राहि पुकार रही थी, लेकिन त्राण करने वाला दूर-दूर तक भी कोई दिखाई नहीं दे रहा था, स्वार्थ, छल, कपट से परिपूरित अन्धविश्वास को ही अपने उद्धार का द्वार समझने वाले अधर्मी ही जब धर्म की बोली लगा-लगाकर करोड़ों धर्मपिपासुओं को प्यासा ही मारने को उद्यत रहे हों, पाखण्ड, आडम्बर और अत्याचार जब दशों दिशाओं में फैलते जा रहे हों। ऐसे निराशामय वातावरण में भारत के सौराष्ट्र प्रदेश में मौरवी नाम की एक छोटी-सी रियासत के टंकारा नामक ग्राम में कर्षणजी लालजी तिवाडी रहते थे। वे सामवेदी औदीच्य थे। उत्तर भारत से आने के कारण वे औदीच्य ब्राह्मण कहलाते थे। कर्षणजी की प्रथम सन्तान मूलजी (मूलशंकर) थे, इन्हें दयाराम नाम से भी पुकारा जाता था। यही मूलजी बाद में स्वामी दयानन्द सरस्वती बनें जिन्होंने न केवल पतन के कारणों को खोजा अपितु राष्ट्रोत्थान के उपाय भी सबको दे गए जो आज भी उतने ही उपयोगी तथा आवश्यक हैं क्योंकि ये उपाय सार्वकालिक सिद्धान्तों पर आधारित हैं।

मूलजी का जन्म सं० १८८१ विक्रमी में हुआ। मूलजी के बाद कर्षणजी के घर में दो पुत्र और पुत्रियों ने जन्म लिया।

कर्षणजी नगर के सम्पत्तिशाली पुरुष थे। इनका व्यवसाय रुपयों का देन-लेन था। इनके पास अपनी जमींदारी और साहूकारी भी थी, ये अपने नगर के जमादार थे। जमादार का पद उन दिनों मौरवी रियासत में अंग्रेजी राज्य के तहसीलदार के समान था। इनके अधीन नगर रक्षा के लिए कुछ सिपाही भी रहते थे। ये धनी और पदाधिकारी होते हुए भी धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे। इनके चरित्र में दृढ़ता तथा स्वभाव में कठोरता थी। मूलजी की माता मृदु स्वभाव की थी और उनमें दया की भावना अधिक थी।

बालक मूलजी की स्मरणशक्ति अच्छी थी व बुद्धि तीव्र थी। पिता ने इन्हें संस्कृत के श्लोक कंठस्थ कराने शुरू कर दिये। आठ वर्ष की अवस्था में इनका शास्त्र विधि के अनुसार उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार हुआ। उपनयन संस्कार के अनुसार इन्हें गायत्री मन्त्र तथा संध्याविधि का शिक्षण दिया गया। रुद्राध्याय कण्ठस्थ करवाया गया और यजुर्वेद पढ़ाना

प्रारम्भ किया।

मूलजी के पिता तथा अन्य सम्बन्धी शैव सम्प्रदाय के थे। शिव की उपासना में उनकी विशेष आस्था थी। मूलजी के अन्तःकरण में भी इन्हीं संस्कारों का बीजारोपण किया गया। इनके पिता इन्हें शैव सम्प्रदाय के अनुसार शिव उपासना, मिट्टी का शिवलिंग बनाकर उसको पूजने का आदेश देने लगे। इनके पिता कर्षणजी चाहते थे कि शिवरात्रि के दिन मूलजी विधिवत् उपासना करते हुए रात्रि जागरण करें, कथा का श्रवण करें।

माता के हृदय में पुत्र के प्रति मोह अधिक था। वह नहीं चाहती थी कि मेरा पुत्र एक दिन भी भूखा रहकर कष्ट सहन करे। वह अपने पति से निवेदन करती थी कि यह बालक सुकोमल है, प्रातः उठते ही कलेवा माँगता है। यह भूखा कैसे रह सकेगा?

सं० १८९४ (ई० सन 1837) विक्रमी में मूलजी तेरह वर्ष के हो गए। इस समय तक मूलजी ने सम्पूर्ण यजुर्वेद कण्ठस्थ कर लिया था। अन्य वेदों के कुछ मन्त्र भी स्मरण कर लिये थे। व्याकरण में शब्द-रूपावली तथा कुछ लघु ग्रन्थ भी पढ़ लिये थे।

शिवरात्रि पूजन-सत्य की ओर

पिता की दृष्टि में मूलजी बुद्धिमान् बालकों की गणना में आ गए। मूलजी मेधावी बालक थे तथा धर्म के प्रति उनकी निष्ठा थी। पिता ने शिवरात्रि के दिन व्रत तथा रात्रि जागरण के महात्म्य की कथा पुत्र को सुनाई। पुत्र को शिवरात्रि के दिन उपवास रखने का आदेश दिया। कोमल मातृहृदय इस आदेश से दुःखी हुआ, माता ने पुनः अपने पतिदेव से विनय की, पर कर्षणजी अपने निश्चय से विचलित न हुए। वे कठोर प्रकृति के पुरुष थे। उनके आदेश में कोई परिवर्तन न हुआ। मूलजी के मन में भी पिता के उपदेश से श्रद्धा की भावना थी। अतः वे भी उपवास के लिए इच्छुक थे।

काठियावाड़ में दक्षिण भारत के अन्य प्रान्तों की भाँति, शिवरात्रि का व्रत फाल्गुन में न मनाकर उसके स्थान पर माघ वदी चौदह को मनाया जाता है। उस दिन मूलजी श्रद्धापूर्वक निराहार रहे। रात्रि के समय अपने पिता के साथ शहर से कुछ दूर एक बड़े शिवालय में पूजा के निमित्त गए। शिवरात्रि के समय चार प्रहरों में चार बार पूजा का विधान है। मूलजी प्रथम बार विधिवत् शिवरात्रि का व्रत रखकर पूजा के निमित्त दीक्षित होकर शिवालय में आए थे। शिवालय में अपूर्व समारोह था। मन्दिर के अन्दर और बाहर दीपक जगमगा रहे थे। सुगन्धित धूपबत्तियों के धूम्र से वायुमण्डल सुवासित था। भक्तजन स्नान करके सुन्दर वस्त्र धारण कर, हाथ में धूप सामग्री और कलश लिये, मस्तक पर विभूति रमाए मन्दिर में आ रहे थे। मन्दिर-द्वार पर घण्टावादन के साथ 'हर-हर महादेव' के उच्च स्वर के सम्मिलित नाद से समीपवर्ती प्रदेश गूँज रहा था। सभी के हृदयों में श्रद्धाभरी उमंग थी।

प्रथम प्रहर की पूजा प्रारम्भ हुई। पुजारी ने शिवजी का अर्चन किया। मूर्ति पर भोग चढ़ाया। उपस्थितजनों ने नतमस्तक होकर शिवलिङ्ग की मूर्ति के प्रति श्रद्धा प्रकट की। दूसरे प्रहर की पूजा भी इसी प्रकार सम्पन्न हुई।

क्रमश

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

जैसा कि सत्र के आरम्भ में आचार्य जी ने कहा था कि अगर आप इस लघु गुरुकुल प्रशिक्षण वर्ग में पूरे समय रहते हैं तो आप पाएंगे कि आपकी अब तक की जानकारी एक तरफ व इन दो दिनों का अनुभव एक तरफ होगा। और ठीक वैसा ही है। आज तक के सफर में मैंने आर्य समाज जैसे सही पथ-प्रदर्शक नहीं देखा। हर कहीं कोई न कोई भटकाव व अस्थिरता अवश्य पाई गई। हर कोई अपने अपने राग अलापने और अपना विचार व धंधा थोपने पर बल दे रहा है। परन्तु काफी समय से जो मन के ऐसे प्रश्न थे जिनका सैद्धान्तिक उत्तर कहीं नहीं मिला, इस लघु गुरुकुल में आकर ऐसे लगा जैसे हम बिल्कुल सही रास्ते पर आ गए हैं।

जिन मुख्य विषयों पर कोई भी संगठन, समाज पन्थ, पार्टी ध्यान देने और बोलने का साहस नहीं रखती, उन विषयों पर बोलने का साहस और उन समस्याओं को दिखाने के साथ जागरूकता व उपाय के साथ सही रास्ता आर्य समाज दिखाता है।

नाम : सोनू, आयु : २४ वर्ष, योग्यता : एम.पी.एड., कार्य : शारीरिक शिक्षक, पता : बालासर, सिरसा, हरियाणा।

इस सत्र में आकर मैंने आर्य समाज के बारे में जाना। यह अनुभव मेरे लिए सौभाग्यशाली रहा। यहां पर मैंने ईश्वर के बारे में जाना। यहाँ मैंने मनुष्य के आत्मा भूत-प्रेत, इन्द्रियों के बारे में जानकारी मिली। यहां पर मुझे राष्ट्र के बारे में जानने को मिला कि राष्ट्र का नाम कैसे मिला। हम गुलामी के शिकार क्यों हुए।

यहां पर यह भी जाना की राष्ट्र का पुनः निर्माण कैसे किया जा सकता है। तथा इसके लिए क्या जरूरी है। हमें आर्य समाज को ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा देकर राष्ट्र को मजबूत करना होगा।

नाम : पारस, आयु : २० वर्ष, योग्यता : बी.ए., कार्य : विद्यार्थी, पता : आदमपुर, हिसार, हरियाणा।

सत्र का अनुभव हमारे लिए अच्छा रहा। हमने ईश्वर का असली रूप जाना और धर्म का महत्व जाना। ऐसी चीजें सीखी जो हमारे दैनिक जीवन में भी उपयोग आ सकें जैसे :- उपासना जो हमें काबिल बनाए, हम ईश्वर को जान सकें और समाज में भी सुधार ला सकें। हमने अपने राष्ट्र की वास्तविकता और इतिहास भी जाना।

हम अपने आस-पास हमारे दोस्त, पड़ोसी और समाज को प्रेरित कर सकते हैं कि हम क्या हैं और हम अपने राष्ट्र के सही निर्माण में योगदान दे सकते हैं।

नाम : अश्वनी, आयु : १८ वर्ष, योग्यता : १२, कार्य : विद्यार्थी, पता : गुलियाना, कैथल, हरियाणा।

इस सत्र में मुझे वैदिक सिद्धान्तों को गहराई से समझने का अवसर मिला। जो कुछ भ्रान्तियां मेरी बुद्धि में थी और मैं उनका निवारण चाहता था उनका निवारण प्रबुद्ध आचार्यों जी के सानिध्य से, मैं पूर्ण कर सका।

दो दिन के इस सत्र में मुझे नई ऊर्जा और उत्साह की अनुभूति हुई है तथा जीवन जीने की नई राह मिली है। इस सत्र में शामिल होने का सुअवसर प्रदान करने के लिए, मैं अयोजक मण्डल व प्रबुद्ध आचार्यों जी का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

नाम : सुनील कुमार, आयु : ३९ वर्ष, योग्यता : बी.ए., कार्य : वैदिक धर्म, पता : गोरछी, हिसार, हरियाणा।

इस सत्र में आकर मुझे बहुत ही जबरदस्त ज्ञान प्राप्त हुआ है, हम धर्म के नाम पर भटके हुए थे और हमें धर्म का सही स्वरूप ही पता नहीं था। यहां आकर हमें देश में जड़ें जमा चुकी अनेक बुराईयों के बारे में पता चला है। हमें ईश्वर क्या है उसकी उपासना कैसे की जाती है उसका सही स्वरूप क्या है यहाँ आकर पता चला है। अब मैं हर रोज सन्ध्या उपासना के द्वारा ईश्वर का ध्यान लगाऊंगा और जब भी अगला सत्र लगेगा अपने और साथियों को लेकर आऊंगा।

हम गांव में हर रविवार को यज्ञ करेंगे जिसके द्वारा बच्चों में अच्छे विचार आएंगे। फिर अगले सत्र में काफी संख्या में युवाओं को लेकर आएंगे और उन्हें आर्य बनाएंगे। हम अपने गांव में भी सत्र लगाएंगे ताकि और ज्यादा तेजी से प्रचार हो।

नाम : ओमप्रकाश, आयु : ३४ वर्ष, योग्यता : १२, कार्य : कृषि, पता : डीघल, झज्जर, हरियाणा।

सत्र का अनुभव बहुत ही अच्छा रहा। बहुत से ऐसे तथ्य ईश्वर के बारे में पता लगे जो कि आज तक पता नहीं थे। उपासना के बारे में तथा उसकी विधि का पता चला। प्रचारक जी का हर बात को समझाने का तरीका बहुत ही सरल था। राष्ट्र के प्रति हमारी जिम्मेदारी व उत्तरदायित्व के बारे में पता चला। आर्यकरण में सहयोग करेंगे।

नाम : निहाल सिंह आर्य, आयु : ४२ वर्ष, योग्यता : बी.टेक, कार्य : इंजीनियर, पता : कोटकासिम, अलवर, राजस्थान, हरियाणा

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाइट- www.aryanirmatrisabha.com पर उपलब्ध है। अतः आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाइट पर डाल दी जाती है अतः पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक- www.aryanirmatrisabha.com/हिन्दी में पत्रिका पर जाएं।



आर्य प्रशिक्षण सत्र, नरकटियागंज, बिहार



आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्य गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृष्णन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटायें जाएंगे।